अध्याय — 12

मानव संसाधन

N8JY7G

मानव संसाधन —

N8TU94

क्या आप मानव रहित विश्व की कल्पना कर सकते हैं? प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग व सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण मानव ही करता है। समाज तथा अर्थव्यवस्था के विकास में मानव का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मानव संसाधनों का उपयोग एवं निर्माण तो करते है। मानव समूह भी विभिन्न गुणों वाले संसाधन होते है। कोयला एक चट्टान का टुकड़ा ही था जब तक की मानव ने उसे उपयोग में लाने तथा प्राप्त करने की तकनीक का आविष्कार नहीं कर लिया था। तभी आज यह संसाधन बना है।

उत्पादक पहलू की दृष्टि से जनसंख्या पर विचार करना राष्ट्रीय सकल उत्पादन के सृजन में उनके योगदान की क्षमता पर बल देता है। दूसरे संसाधनों की भाँति ही जनसंख्या भी एक संसाधन है। ''संसाधन'' विशाल जनसंख्या का एक सकारात्मक पहलू है।

जनसंख्या —

जनसंख्या से तात्पर्य किसी निश्चत स्थान में एक निश्चित समय में रहने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या से होता है। सामाजिक अध्ययन में जनसंख्या आधार तत्व है। यह एक संदर्भ बिन्दु है जिसके द्वारा दूसरे तत्त्वों का अवलोकन किया जाता है तथा उनके अर्थ एवं महत्व ज्ञात किये जाते हैं। किसी क्षेत्र में मानव जनसंख्या में वृद्धि, इसका वितरण एवं विशेषताएँ या गुण पर्यावरण के सभी स्वरूपों को समझने तथा उनकी विवेचना करने के लिए मूल पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं। मानव पृथ्वी के संसाधनों का उत्पादन एवं उपयोग करता है। अतः यह जानकारी आवश्यक है कि किस देश में कितने लोग निवास करते हैं? वे कहाँ एवं कैसे रहते हैं? उनकी संख्याओं में वृद्धि कैसी एवं किन कारणों से हो रही है तथा उनकी कौन–कौनसी विशेषताएँ हैं?

भारतीय जनगणना हमारे देश की जनसंख्या से संबंधित जानकारी हमें प्रदान करती है। जनसंख्या की परिभाषा में तीन प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करते है :

1. **जनसंख्या का आकार, वितरण एवं घनत्व** : व्यक्तियों की कुल संख्या, पुरूष, महिला एवं बच्चे आदि का अनुपात, जनसंख्या का वितरण तथा जनसंख्या के संसाधनों पर दबाव के आकलन हेतु निश्चित प्रदेश में जनसंख्या घनत्व आदि।
2. **जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन** : किसी स्थान पर जनसंख्या में निश्चित समयावधि में उसमें परिवर्तन, जनसंख्या में वृद्धि तथा उसके कारण।
3. **जनसंख्या के गुण एवं विशेषताएँ** : व्यक्तियों की उम्र, लिंगानुपात अर्थात पुरूषों व महिलाओं की संख्या का अनुपात, उनकी साक्षरता एवं शिक्षा का स्तर, व्यावसायिक संरचना एवं स्वास्थ्य की अवस्था इत्यादि।

जनसंख्या का आकार एवं वितरण —

तालिका 12.1 : विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश

क्र. सं.	देश	आधार तिथि	जनसंख्या (करोड़ में)	दशकीय वृद्धि (प्रतिशत में)
1.	चीन	01.11.2010	1,34.10	5.43
2.	भारत	01.03.2011	1,21.02	17.64
3.	सं.रा. अमेरिका	01.04.2010	30.87	7.26
4.	इण्डोनेशिया	31.05.2010	23.76	15.05
5.	ब्राजील	01.08.2010	19.07	9.39
6.	पाकिस्तान	01.07.2010	18.48	24.78
7.	बांग्लादेश	01.07.2010	16.44	16.76
8.	नाइजीरिया	01.07.2010	15.83	26.84
9.	रूसी गणराज्य	01.07.2010	14.04	−4.29
10.	जापान	01.10.2010	12.81	1.1
11.	अन्य देश	01.07.2010	284.47	15.43
12.	विश्व	01.07.2010	690.87	12.97

* स्रोत — www.censusindia.gov.in

भारत की जनसंख्या का आकार बहुत बड़ा है। विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है तथा तीसरे, चौथे व पाँचवे स्थान पर क्रमशः संयुक्त राज्य अमेरिका, इंडोनेशिया एवं ब्राजील है।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1,21,01,93,422 थी जो कि विश्व की कुल जनसंख्या का 17.3 प्रतिशत लगभग था। यह जनसंख्या भारत के 32.8 लाख वर्ग

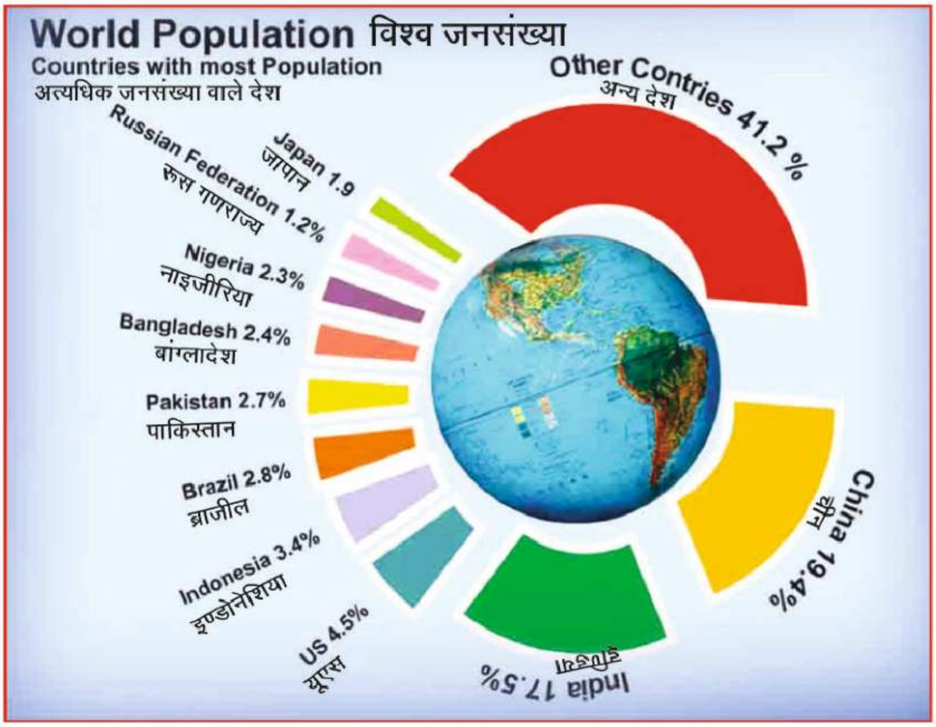

आरेख 12.1 : विश्व की जनसंख्या में भारत का भाग

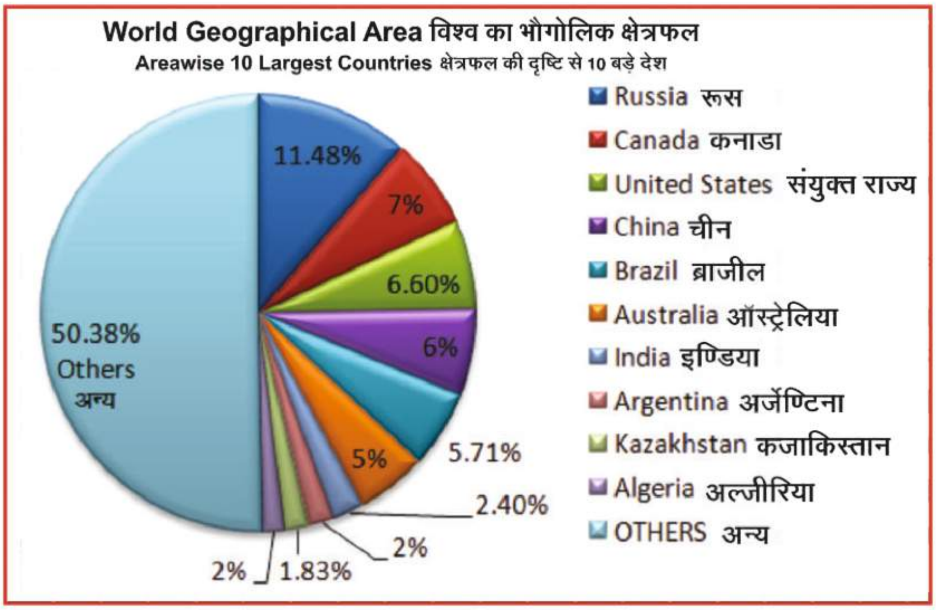

आरेख 12.2 : विश्व के क्षेत्रफल में भारत का भाग

किमी (विश्व के स्थलीय भू–भाग का 2.4 प्रतिशत) के विशाल क्षेत्र में असमान रूप से वितरित है।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देश की सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जिसकी कुल जनसंख्या 19,95,81,477 है। उत्तरप्रदेश में देश की कुल जनसंख्या का 16.49 प्रतिशत भाग निवास करता है इसके विपरीत हिमालय क्षेत्र के राज्य सिक्किम की जनसंख्या केवल 6,07,688 है जो देश की कुल जनसंख्या का 0.05 प्रतिशत भाग है। लक्षद्वीप में केवल 64,429 लोग निवास करते है।

भारत की लगभग आधी जनसंख्या केवल पाँच राज्यों उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं आंध्र प्रदेश में निवास करती है। जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का भारत में आठवाँ स्थान है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है।

तालिका 12.2 : वर्ष 2001 व 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान राज्य की जिलावार कुल जनसंख्या व स्थान

राज्य में स्थान 2011	जिला	जनसंख्या 2011	जनसंख्या 2001	राज्य में स्थान 2001
1.	जयपुर	6663971	5251071	1
2.	जोधपुर	3685681	2886505	3
3.	अलवर	3671999	2991552	2
4.	नागौर	3309234	2775058	4
5.	उदयपुर	3067549	2481201	5
6.	सीकर	2677737	2287788	6
7.	बाड़मेर	2604453	1964835	10
8.	अजमेर	2584913	2178447	7
9.	भरतपुर	2549121	2100020	8
10.	भीलवाड़ा	2410459	2020969	9
11.	बीकानेर	2367745	1902110	12
12.	झुंझुंनू	2139658	1913689	11
13.	चूरू	2041172	1696039	15
14.	पाली	2038533	1820251	13
15.	गंगानगर	1969520	1789423	14
16.	कोटा	1950491	1568705	16
17.	जालोर	1830151	1448940	18
18.	बांसवाड़ा	1798194	1420601	19
19.	हनुमानगढ़	1779650	1518005	17
20.	दौसा	1637226	1323002	21
21.	चित्तौड़गढ़	1544392	1330360	20
22.	करौली	1458459	1205888	23
23.	टोंक	1421711	1211671	22
24.	झालावाड़	1411327	1180323	24
25.	डूंगरपुर	1388906	1107643	26
26.	सवाईमाधोपुर	1338114	1117057	25
27	बारां	1223921	1021473	27
28	धौलपुर	1207293	983258	28
29.	राजसमंद	1158283	982523	29
30.	बूँदी	1113725	962620	30
31.	सिरोही	1037185	851107	31
32.	प्रतापगढ़*	868231	706807	32
33.	जैसलमेर	672008	508247	33

* नवनिर्मित ज़िले

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या 6,86,21,012 है जो देश की कुल जनसंख्या का 5. 67 प्रतिशत भाग है। यह 3.42 लाख वर्ग किमी क्षेत्र पर असमान रूप से वितरित है। राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला जयपुर है जिसकी जनसंख्या 66,63,971 तथा सबसे कम जनसंख्या वाला जिला जैसलमेर है जिसकी कुल जनसंख्या 6,72,008 है।

जनसंख्या वृद्धि –

जनसंख्या वृद्धि का अर्थ किसी विशेष समयान्तराल में (जैसे दस वर्षों में) किसी देश/राज्य/स्थान के निवासियों की संख्या में परिवर्तन से होता है। इस प्रकार के परिवर्तन को दो प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है– पहला सापेक्ष वृद्धि तथा दूसरा प्रतिवर्ष या प्रति दस वर्ष में होने वाला प्रतिशत में जनसंख्या परिवर्तन।

किसी स्थान की जनंसख्या में वृद्धि या कमी प्रत्यशतः जन्म एवं मृत्यु के अन्तर तथा प्रवसन के कारण होती है।

प्रत्येक वर्ष या एक दशक में परिवर्तित जनसंख्या कुल जनसंख्या में वृद्धि/कमी का परिणाम होती है। पहले की जनसंख्या (जैसे 2001 की जनसंख्या) को बाद की जनसंख्या (जैसे 2011 की जनसंख्या) से घटाकर इसे प्राप्त किया जाता हैं। इसे निरपेक्ष वृद्धि कहते हैं। किसी वर्ष की मूल जनसंख्या में प्रत्येक 100 व्यक्तियों पर हुई व्यक्तियों की वृद्धि/कमी जनसंख्या वृद्धि दर कहलाती है। अर्थात यदि किसी स्थान या देश की वार्षिक मूल जनसंख्या में प्रत्येक 100 व्यक्तियों पर

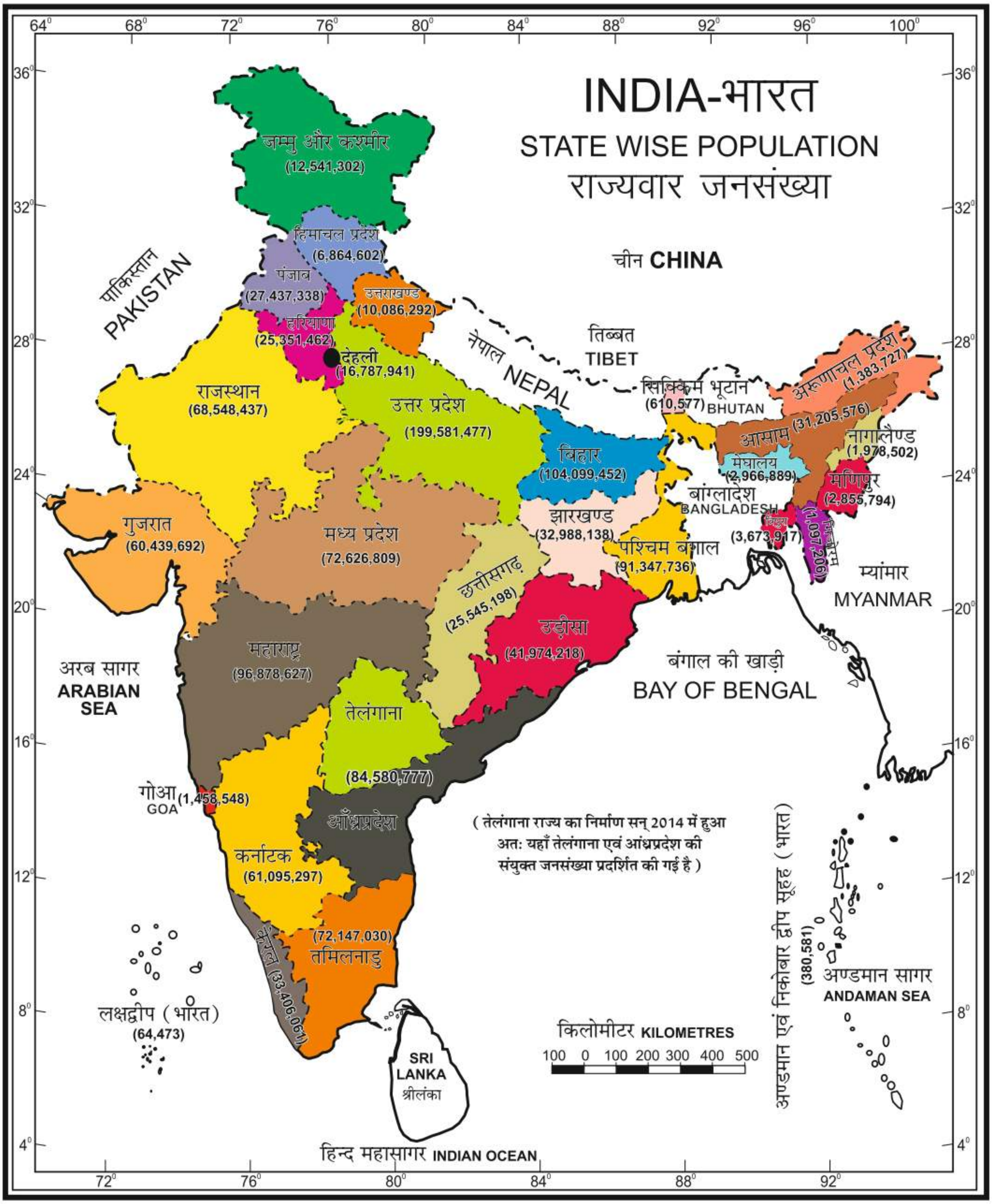

मानचित्र 12.1 : भारत की राज्यवार जनसंख्या

यदि 4 व्यक्तियों की वृद्धि होती है तो प्रतिवर्ष जनसंख्या वृद्धि दर 4 प्रतिशत होगी।

तालिका 12.3 : भारत की जनसंख्या में निरपेक्ष वृद्धि एवं दशकीय वृद्धि दर

वर्ष	कुल जनसंख्या (दस लाख में)	एक दशक में निरपेक्ष वृद्धि (दस लाख में)	दशकीय वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1951	361.0	42.43	13.31
1961	439.2	78.15	21.64
1971	548.2	108.92	24.80
1981	683.3	135.17	24.66
1991	846.4	163.09	23.86
2001	1028.7	182.32	21.34
2011	1,21,0.6	131.45	17.70

भारत की जनसंख्या सन् 1951 में 3,61 मिलियन से बढ़कर सन् 2011 में 1210.6 मिलियन हो गई है।

सारणी एवं चित्र यह प्रदर्शित करता है कि 1951 से 1981 तक जनसंख्या की वृद्धि दर नियमित रूप से बढ़ रही थी जो 1951 में 3,610 मिलियन से 1981 में 6,830 मिलियन हो गई। ये जनसंख्या में तीव्र वृद्धि की व्याख्या करता है। परन्तु 1981 में वृद्धि दर धीरे–धीरे कम होने लगी। इस दौरान जन्म दर में भी कमी आंकी गई।

राजस्थान में भी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। राज्य की जनसंख्या की दशकीय (दस वर्षों के अन्तराल में) वृद्धि दर 1981 में 32.97 प्रतिशत थी। हालाँकि बाद की जनगणनाओं में जनसंख्या वृद्धि दर कम हुई है। जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर कुछ कम होकर 2001 में 28.41 प्रतिशत तथा 2011 में 21.44 प्रतिशत रही। इसके बावजूद भी यह भारत की 2011 की दशकीय वृद्धि दर 17.64 से बहुत अधिक है। राजस्थान में

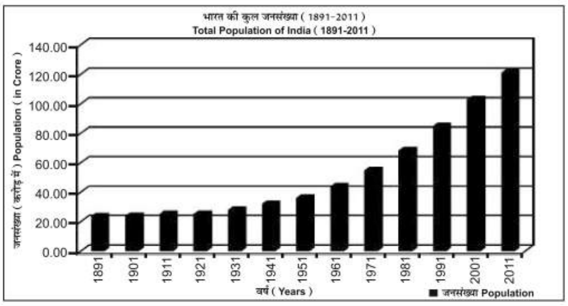

आरेख 12.3 : भारत में कुल जनसंख्या में वृद्धि (1891–2011)

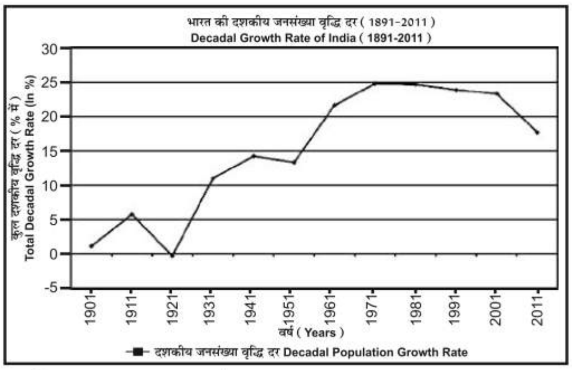

आरेख 12.4 : भारत में जनसंख्या वृद्धि दर (1901–2011)

2001–2011 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर बाड़मेर जिले में 32.55 प्रतिशत (सबसे अधिक) व गंगानगर जिले में 10.06 प्रतिशत (सबसे कम) रही।

इस बात पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है कि भारत की जनसंख्या बहुत अधिक है। भारत की वर्तमान जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि 122 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष है जो कि संसाधनों एवं पर्यावरण पर अत्यधिक दबाव डालती है एवं यह इनके संरक्षण के प्रयासों को निष्क्रिय करने के लिये पर्याप्त है।

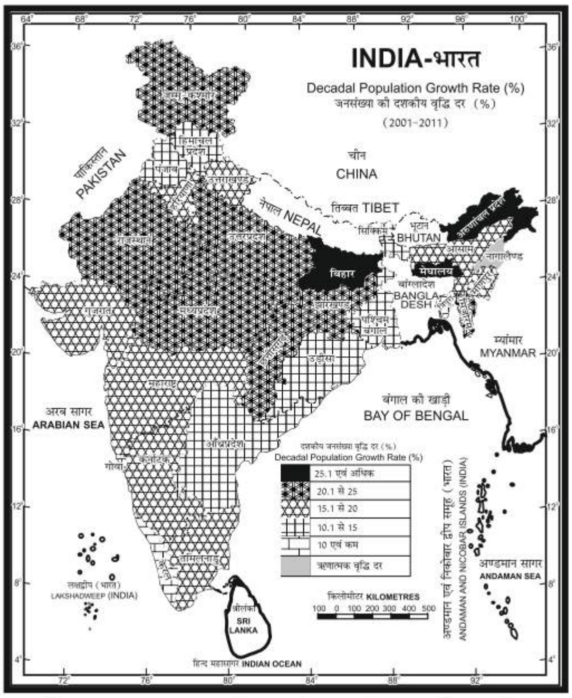

मानचित्र 12.2 : भारत में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर

वृद्धि दर में कमी जन्म दर को नियन्त्रित करने के लिये किये गये प्रयासों की सफलता को प्रदर्शित करती है। भारत में आजादी के बाद से ही यह प्रयास किये जा रहे है। इसके उपरान्त भी जनसंख्या वृद्धि जारी है, जो हमारे प्रयासों की असफलता का द्योतक है। सन् 2045 तक भारत चीन को पीछे छोड़ते हुये विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जाने का संकेत है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण :—

जनसंख्या में होने वाली वृद्धि या परिवर्तन के तीन प्रमुख घटक हैं— जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास। केवल जन्म दर एवं मृत्यु दर के बीच का अंतर जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि कहलाता है।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर जितने जीवित बच्चों का जन्म होता है उसे जन्म दर कहते हैं। यह वृद्धि एक प्रमुख घटक है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में सदैव जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक रही है।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर मरने वालों की संख्या को मृत्यु दर कहा जाता है। भारत में स्वतंत्रता के बाद मृत्यु दर में तेज गिरावट भारत की जनसंख्या वृद्धि दर का प्रमुख कारण है।

सन् 1980 तक जन्म दर के लगातार उच्च बने रहने एवं मृत्यु दर में लगातार गिरावट के कारण जन्म दर तथा मृत्यु दर में बहुत अधिक अंतर आ गया एवं इसी कारण जनसंख्या वृद्धि दर अधिक हो गई। सन् 1981 से धीरे–धीरे जन्म दर में भी गिरावट प्रारम्भ हो गई जिसके परिणाम स्वरूप जनसंख्या वृद्धि दर में भी गिरावट आने लगी है।

जनसंख्या का तीसरा प्रमुख घटक है— प्रवास। व्यक्तियों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाने एवं आवास के स्थाई बदलाव को प्रवास कहते हैं। प्रवास आंतरिक (देश के भीतर) या अन्तर्राष्ट्रीय (देशों के बीच) हो सकता है। आंतरिक प्रवास देश जनसंख्या के आकार में कोई परिवर्तन नहीं लाता है लेकिन यह एक देश के भीतर जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करता है। जनसंख्या वितरण एवं उसके घटकों को परिवर्तित करने में प्रवास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

भारत में अंतराराज्यीय स्तर पर सर्वाधिक प्रवास ग्रामीण से ग्रामीण क्षेत्रों में होता है क्योंकि विवाह के बाद महिलाऐं प्रवासित होती हैं। दूसरे नंबर पर ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अपकर्षण कारक प्रभावी होते हैं। ये ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी एवं बेरोजगारी की प्रतिकूल अवस्थायें हैं तथा नगर का आकर्षण प्रभाव रोजगार में वृद्धि एवं अच्छे जीवन स्तर की आकांक्षाओं को दर्शाता है।

जनसंख्या घनत्व :—

N93QAR

जनसंख्या घनत्व जनसंख्या के असमान वितरण तथा किसी क्षेत्र में भूमि एवं अन्य संसाधनों पर दबाव का चित्रण प्रस्तुत करता है। प्रति इकाई क्षेत्रफल में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं।

सन् 2011 में भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था जहाँ राज्यों में बिहार का जनसंख्या घनत्व 1102 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. सर्वाधिक तथा अरुणाचल प्रदेश में 17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. सबसे कम है। आगे दिये गये मानचित्र में भारत में जनसंख्या घनत्व के वितरण में प्रादेशिक असमानता को दर्शाया गया है।

असम एवं अधिकतर प्रायद्वीपीय राज्यों का जनसंख्या घनत्व मध्यम है। पहाड़ी, कटे–छटे एवं पथरीले भू–भाग, मध्यम से कम वर्षा, छिछली एवं कम उपजाऊ मिट्टी इन राज्यों के जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करती है।

उत्तरी मैदानी भाग एवं दक्षिण में केरल का जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक है क्योंकि यहाँ समतल मैदान एवं उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है तथा पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है।

तालिका 12.4 : भारत में जनसंख्या घनत्व (1901—2011)

जनगणना वर्ष	जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.)	वास्तविक वृद्धि
1901	77	—
1911	82	5
1921	81	—1
1931	90	9
1941	103	13
1951	117	14
1961	142	25
1971	177	35
1981	216	39
1991	267	51
2001	325	58
2011	382	57

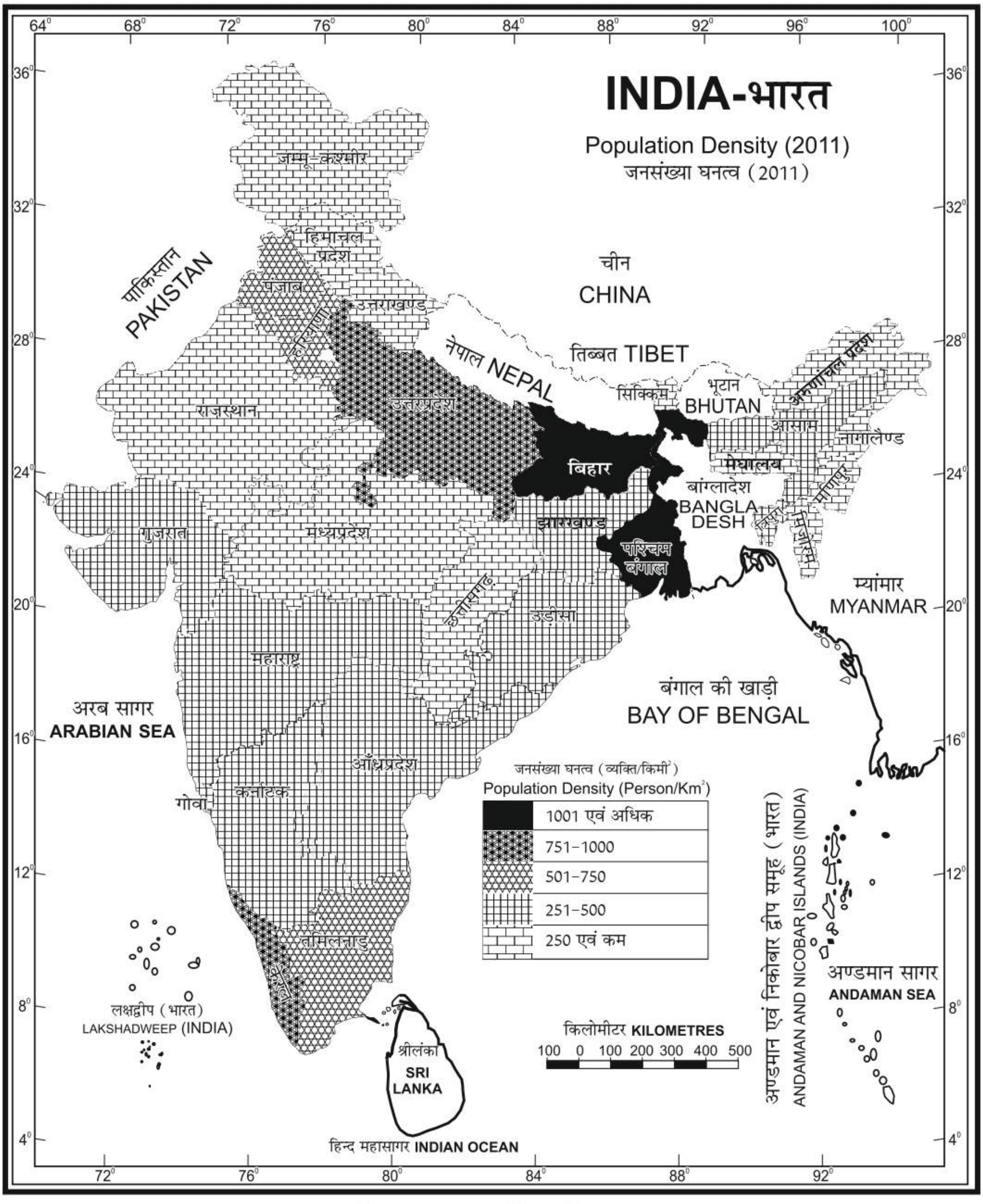

मानचित्र 12.3 : भारत में जनसंख्या घनत्व

राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 2011 में 201 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी है। इसमें 2001 में जनसंख्या घनत्व 165 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. की तुलना में 36 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी की वृद्धि हुई है। तालिका 12.5 राज्यस्तरीय जनसंख्या घनत्व के असमान वितरण को दर्शाती है। आगे दिये गये राजस्थान के जनसंख्या घनत्व मानचित्र में यह प्रादेशिक असमानता और अधिक स्पष्ट रुप से दर्शायी गई है।

तालिका 12.5 : राजस्थान राज्य में जिलावार जनसंख्या घनत्व एवं स्थान (सन् 2001 व 2011)

राज्य में स्थान	राज्य / जिला	जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी)		राज्य में स्थान
2011		2011	2001	2001
–	राजस्थान	201	165	–
1	जयपुर	598	471	1
2	भरतपुर	503	415	2
3	दौसा	476	384	3
4	अलवर	438	357	4
5	बांसवाड़ा	399	315	7
6	धौलपुर	398	324	5
7	कोटा	374	301	8
8	डूंगरपुर	368	294	10
9	झुंझूनूं	361	323	6
10	सीकर	346	296	9
11	अजमेर	305	257	11
12	राजसमंद	302	256	12
13	सवाईमाधोपुर	297	248	13
14	करौली	264	219	14
15	उदयपुर	242	196	15
16	भीलवाड़ा	230	193	16
17	झालावाड़	227	190	17
18	प्रतापगढ़	211	172	18
19	सिरोही	202	166	22
20	टोंक	198	168	19
21	चित्तौड़गढ़	193	166	21
22	बूंदी	193	167	20
23	नागौर	187	157	25
24	हनुमानगढ़	184	157	24
25	गंगानगर	179	163	23
26	बारां	175	146	27
27	जालौर	172	136	28
28	पाली	165	147	26
29	जोधपुर	161	126	29
30	चूरू	148	123	30
31	बाड़मेर	92	69	31
32	बीकानेर	78	63	32
33	जैसलमेर	17	13	33

राजस्थान के जिलों में जनसंख्या घनत्व के सम्बन्ध में भारी असमानता है। 2011 में राजस्थान का सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व 598 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. जयपुर जिले का व सबसे न्यूनतम जनसंख्या घनत्व जैसलमेर जिले का 17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

राजस्थान के जनसंख्या घनत्व में उत्तरोत्तर वृद्धि के बावजूद भी भारत के औसत जनसंख्या घनत्व से यह कम है।

भारत की जनसंख्या की विशेषताएँ

साक्षरता दर :–

साक्षरता किसी भी जनसंख्या का बहुत ही महत्वपूर्ण गुण है। एक शिक्षित और जागरुक नागरिक ही बुद्धिमतापूर्ण निर्णय ले सकता है तथा विकास के कार्यों में अधिक योगदान प्रदान कर सकता है। साक्षरता स्तर में कमी आर्थिक प्रगति में भी एक गंभीर बाधा है।

2011 की जनगणना के अनुसार एक व्यक्ति जिसकी आयु 7 वर्ष या उससे अधिक है जो किसी भाषा में मूलभूत समझ के साथ लिख या पढ़ सकता है, उसे साक्षर की श्रेणी में रखा जाता है। भारत की साक्षरता में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देश की साक्षरता दर 73 प्रतिशत है जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 80.9 प्रतिशत व महिलाओं की 64.6 प्रतिशत है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक साक्षर राज्य केरल है जिसकी साक्षरता दर 94 प्रतिशत है तथा सबसे कम साक्षरता दर बिहार राज्य (61.8 प्रतिशत) की है।

राजस्थान में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 3,89,70,500 व्यक्ति साक्षर है। राज्य की साक्षरता दर 67.07 प्रतिशत है जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 80.51 प्रतिशत व महिलाओं की साक्षरता मात्र 52.66 प्रतिशत है। राजस्थान में पिछले दशकों में साक्षरता दर में वृद्धि हुई है किन्तु अभी भी राजस्थान साक्षरता की दृष्टि से राष्ट्रीय औसत से पीछे है। राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों विशेषकर महिलाओं में साक्षरता का स्तर काफी नीचा है। कोटा जिले की साक्षरता दर 77.48 प्रतिशत है जो कि राज्य में सर्वाधिक है तथा सबसे कम साक्षरता दर जालोर जिले (55.58 प्रतिशत) की है।

राज्य में साक्षरता दर की वृद्धि हेतु चलाए गये कई कार्यक्रमों जैसे साक्षरता अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, सतत् साक्षरता

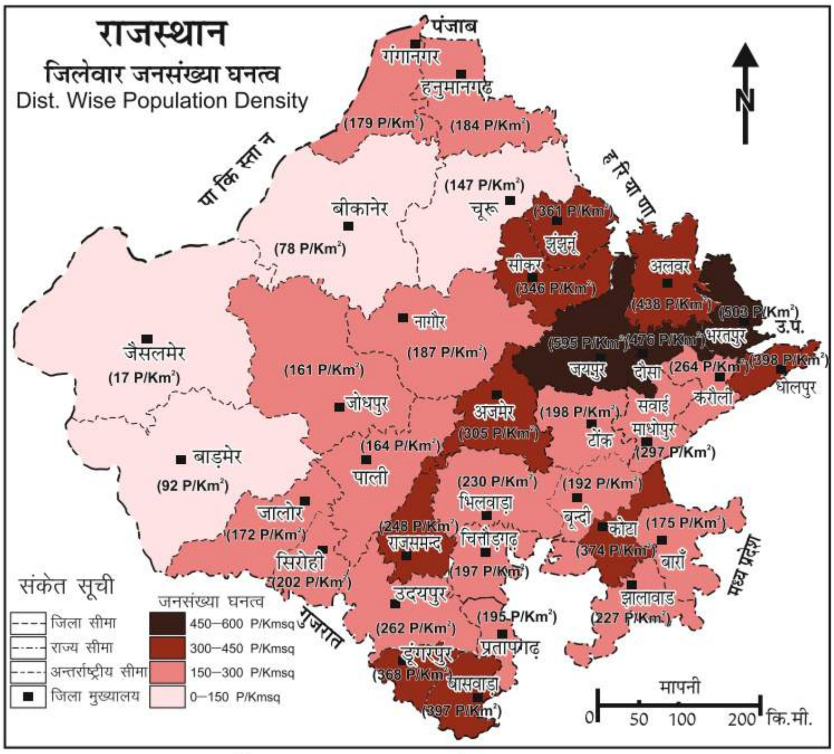

मानचित्र 12.4 : राजस्थान में जनसंख्या घनत्व

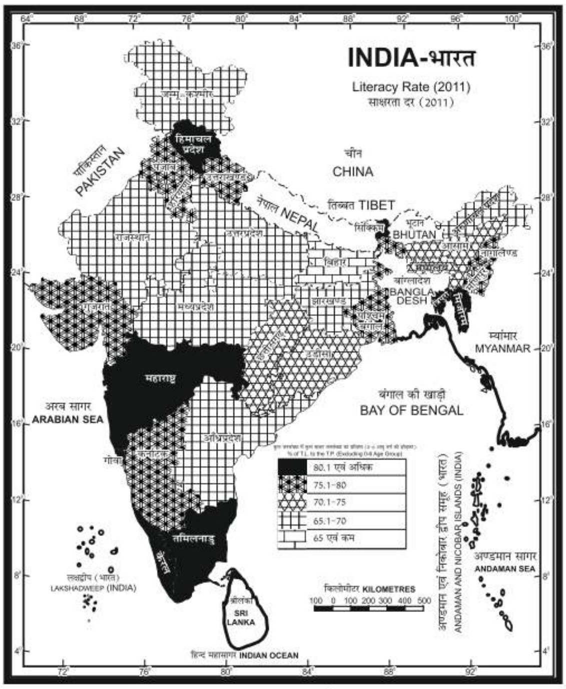

मानचित्र 12.5 : भारत में साक्षरता दर

कार्यक्रम, बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान एवं प्रोत्साहन, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा इत्यादि चलाये गये है जिनके कारण साक्षरता दरों में वृद्धि परिलक्षित हुई है। परन्तु आज भी महिला साक्षरता दर पुरुष साक्षरता दर से बहुत कम है। अब बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं। जिनमें कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, ग्रामीण बालिकाओं को ट्रांसपोर्ट वाउचर, गार्गी पुरस्कार, आपकी बेटी योजना, देवनारायण छात्रा स्कूटी वितरण व छात्राओं को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना व अन्य बालिका प्रोत्साहन योजना प्रमुख है।

लिंगानुपात :–

लिंगानुपात किसी क्षेत्र विशेष यथा देश, राज्य या स्थान की जनसंख्या में पुरुष व स्त्री की संख्या का अनुपात हैं। भारत में किसी भौगोलिक क्षेत्र में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को इसका मानक माना जाता है अर्थात प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता है।

यह जानकारी किसी दिये गये समय में समाज में पुरुषों

व महिलाओं के बीच समानता अथवा असमानता की स्थिति को मापने के लिये एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश का लिंगानुपात 940 है अर्थात् 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 940 ही है। केरल राज्य का लिंगानुपात 1084 है जो कि सर्वाधिक है। हरियाणा लिंगानुपात में सबसे पिछड़ा राज्य है। यहाँ लिंगानुपात 879 मात्र है।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का लिंगानुपात 928 जो कि सन् 2001 के लिंगानुपात (921 स्त्री प्रति हजार पुरुष) की तुलना में बढ़ा है। सन् 2011 का लिंगानुपात 1901 से अब तक की सभी जनगणनाओं में सबसे अधिक है जो राज्य की सामाजिक प्रगति का सूचक है।

राजस्थान में डूंगरपुर व राजसमन्द जिले ऐसे हैं जहाँ प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या राज्य में सबसे अधिक है। डूंगरपुर में लिंगानुपात 990 तथा राजसमन्द में 988 महिलायें प्रति हजार पुरुष है। राज्य में सबसे कम लिंगानुपात धौलपुर जिले का है जहाँ प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 845 है।

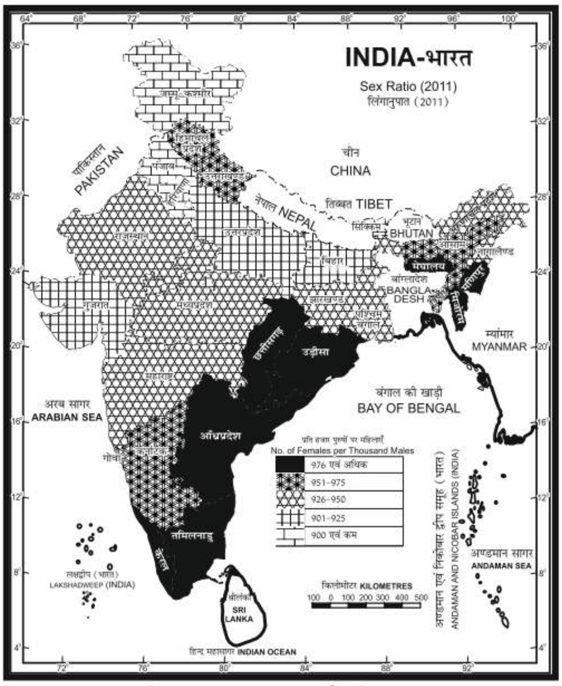

मानचित्र 12.6 : भारत में लिंगानुपात

ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में लिंगानुपात अधिक रहा है। लिंगानुपात पुरुषों के पक्ष में रहने का प्रमुख कारण अनेकों स्तरों पर महिलाओं की समाज में निम्न स्थिति तथा सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं तक उनकी कमजोर पहुँच है। इसके अतिरिक्त महिला भ्रूण हत्या भी इसका एक कारण मानी जाती है। सरकार द्वारा महिला भ्रूण हत्या रोकने और लड़कियों के जन्म और उनके जीवित रहने की स्थिति में सुधार लाने के विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। इस समस्या का समाधान मूलतः जनजागृति और शिक्षा के प्रसार से ही संभव हो सकेगा।

नगरीकरण –

नगरीकरण से तात्पर्य किसी भी क्षेत्र में कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात से है। भारत में बढ़ते नगरीयकरण के स्तर के लिये उत्तरदायी कारकों में जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करना, शहरी क्षेत्रों का भौतिक विस्तार, शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि तथा ग्रामीण क्षेत्रों का नवीन नगरीय क्षेत्रों में बदलना है।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत में नगरों की संख्या व आकार

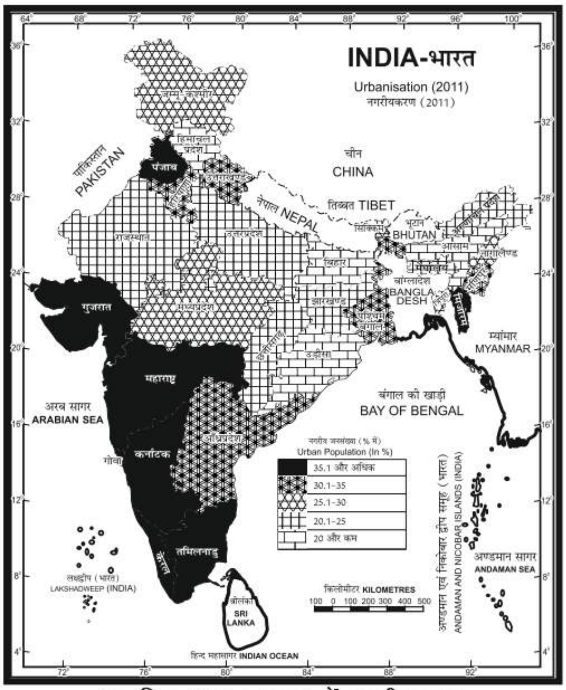

मानचित्र 12.7 : भारत में नगरीयकरण

में तेजी से वृद्धि हुई है और साथ ही कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत भी बढ़ा है। एक ओर जहाँ नगरीकरण

(शहरीकरण) आधुनिक औद्योगीकरण व सामयिक प्रणाली का द्योतक है वहीं दूसरी ओर यह पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में असंतुलन का द्योतक है एवं अनेकों रुपों में पर्यावरण के ह्रास हेतु उत्तरदायी है।

भारतीय जनगणना के अनुसार नगर वह स्थान है जहाँ की जनसंख्या 5 हजार व्यक्ति या इससे अधिक हो, जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर या इससे अधिक हो तथा न्यूनतम 75 प्रतिशत पुरुष श्रमिक जनसंख्या गैर कृषि कार्यों में कार्यरत हो। इसके अतिरिक्त नगर पालिका, नगर परिषद, नगर निगम, सैनिक छावनी बोर्ड या अधिसूचित शहरी क्षेत्र (नोटिफाइड एरिया) आदि सभी को शहरी क्षेत्र की श्रेणी में रखा गया है।

भारत की ग्रामीण जनसंख्या शहरी जनसंख्या से अधिक है भारत की जनसंख्या का दो तिहाई से थोड़ा अधिक भाग गाँवों में निवास करता है। यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। भारत में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत धीरे–धीरे घट रहा है तथा शहरी जनसंख्या का भाग धीरे–धीरे बढ़ रहा है। इसके मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का रोजगार, शिक्षा एवं अन्य शहरी सुविधाओं हेतु शहर की ओर पलायन करना है।

तालिका 12.6 : भारत में ग्रामीण व शहरी जनसंख्या का प्रतिशत (1901–2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	
	ग्रामीण	शहरी
1901	89.2	10.8
1911	89.7	10.3
1921	88.8	11.2
1931	86.0	12
1941	86.1	13.9
1951	82.7	17.3
1961	82	18
1971	80.1	19.9
1981	76.7	23.3
1991	74.3	25.7
2001	72.2	27.8
2011	68.8	31.2

भारत की 121 करोड़ में से 83.3 करोड़ जनसंख्या ग्रामीण व 37.7 करोड़ जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करती है अर्थात जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत भाग ग्रामीण है। तालिका 12.6 विभिन्न दशकों में ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या को प्रदर्शित करती है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि प्रत्येक दशक में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ रहा है जो जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन को दर्शाता है।

राजस्थान की कुल जनसंख्या का 75.13 प्रतिशत भाग ग्रामीण एवं शेष 24.87 प्रतिशत भाग शहरी क्षेत्र में निवास करता है। हालांकि शहरीकरण की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है परन्तु आज भी राजस्थान की 3/4 जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा कृषि उनका प्रमुख व्यवसाय है।

जनसंख्या समस्या –

भारत की जनसंख्या का आधार बहुत चौड़ा है। इस कारण जनसंख्या में प्रतिवर्ष होने वाली वृद्धि थोड़ी होने पर भी सकल वृद्धि बहुत अधिक हो जाती है। भारत के संदर्भ में जनसंख्या में अधिक वृद्धि देश की आर्थिक संवृद्धि में बाधक है। बहुत अधिक जनसंख्या होने के कारण जीवन की गुणवत्ता पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण भोजन, कपड़ा, आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी मूल आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अधिक संसाधनों का उपयोग करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त बेरोजगारी, गरीबी इत्यादि समस्याएँ भी लगातार बढ़ती जाती हैं व अन्य भौतिक सुख सुविधाओं जैसे पीने के पानी, बिजली, यातायात, आवास आदि की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

भारत की जनसंख्या में मृत्यु दर में तेजी से गिरावट भी एक अच्छी विशेषता रही है। परन्तु जन्म दर में धीमी गिरावट जनसंख्या समस्या का प्रमुख कारण है। अतः जन्म दर में कमी करके जनसंख्या समस्या का समाधान किया जा सकता है।

जनसंख्या नीति –

परिवारों के आकार को सीमित रख कर देश की जनसंख्या के स्वास्थ्य एवं कल्याण को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने 1952 में एक व्यापक परिवार नियोजन कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। परिवार कल्याण कार्यक्रम जिम्मेदार तथा सुनियोजित पितृत्व को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत हैं। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 कई वर्षों के नियोजित प्रयासों का परिणाम है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000–

इस जनसंख्या नीति में जनसंख्या से सम्बन्धित मुद्दों

को तीन भागों में दिया गया है, जो कि जनसंख्या के समय आधारित नियंत्रण प्रयासों एवं नीति के लक्ष्यों को इंगित करते हैं।

अल्पकालिक मुद्दे : ऐसे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया, जिनको तुरन्त प्रभाव से लागू किया जाना आवश्यक था जैसे गर्भ निरोधक उपायों के विस्तार के साथ–साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी बुनियादी ढाँचे में सुधार।

मध्यकालीन मुद्दे : इसमें यह लक्ष्य रखा गया कि सन् 2010 तक भारत की जन्म दर को विस्थापन स्तर पर लाया जायेगा।

दीर्घकालीन मुद्दे : इसके अन्तगर्त टिकाऊ आर्थिक व सामाजिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये सन् 2045 तक भारत की जनसंख्या को स्थिर जनसंख्या स्तर पर लाना लक्ष्य रखा गया।

राजस्थान की जनसंख्या नीति –

राजस्थान में जनसंख्या वृद्धि का कारण राज्य की विशेष भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है। यहाँ का दो तिहाई भाग मरू प्रदेश है और एक बड़ा भाग पर्वतीय एवं जनजाति क्षेत्र है। महिला साक्षरता 52.66 प्रतिशत ही है तथा सामाजिक चेतना शोचनीय स्तर पर है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी संस्थागत प्रसव की अपेक्षा दाई द्वारा प्रसव कराने की परिपाटी चल रही है। इससे शिशु मृत्यु दर भी यहाँ अधिक है। बच्चे के स्वस्थ एवं जीवित रहने की कम सम्भावना, कम आयु में विवाह तथा लड़का पैदा करने की चाह के कारण प्रदेश की जन्म दर अधिक रही है।

जनसंख्या वृद्धि की चुनौती का सामना करने के लिए राजस्थान में विभिन्न गतिविधियों एवं योजनाओं के माध्यम से जनसंख्या स्थायित्व के प्रयास किये जा रहे हैं। योग्य दम्पत्तियों को उनकी इच्छानुसार परिवार कल्याण की आवश्यक सेवायें उपलब्ध करवाकर परिवार सीमित करने हेतु शिक्षित किया जा रहा है। नियमित टीकाकरण अभियान, मातृत्व शिशु स्वास्थ्य पोषण दिवस व मुख्यमंत्री पंचामृत अभियान चलाकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों को पोषण सेवाएं सुलभ करवाई जा रही है, ताकि शिशु एवं मातृत्व मृत्यु दर को कम किया जा सके।

जन मंगल योजना के माध्यम से गाँव–गाँव में परिवार कल्याण के अंतर्गत साधन उपलब्ध करवा रहे हैं। परिवार कल्याण कार्यक्रम में महिलाओं की अहम भूमिका है। अतः महिला स्वास्थ्य केन्द्रों को सुदृढ़ करने के प्रावधान किये गये हैं ताकि विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को विभिन्न जन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी हो सके तथा वे इससे लाभान्वित हो सके। विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत सरकार द्वारा दूर दराज के क्षेत्रों में चिकित्सा एवं परिवार कल्याण की सेवाओं को सुलभ करवाया जा रहा है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. मानव संसाधन वह अवधारणा है जो जनसंख्या को अर्थ व्यवस्था पर दायित्व से अधिक परिसंपत्ति के रूप में देखती है।
2. किसी निश्चित स्थान पर एक निश्चित समय में रहने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या उस स्थान की जनसंख्या कहलाती है।
3. भारत जनसंख्या की दृष्टि से चीन के पश्चात विश्व में दूसरे स्थान पर है।
4. एक निश्चित समय अन्तराल में जनसंख्या की अधिकारिक गणना जनगणना कहलाती है तथा यह भारत में प्रत्येक दस वर्षों के अन्तराल में होती है।
5. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़, 1 लाख व 6 हजार थी।
6. 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है तथा जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का देश में आठवां स्थान है।
7. राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला जयपुर व सबसे कम जनसंख्या वाला जिला जैसलमेर है।
8. किसी स्थान की 10 वर्षों के भीतर जनसंख्या वृद्धि दर दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर कहलाती है। यह धनात्मक या ऋणात्मक हो सकती है।
9. 2011 की जनगणना से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 2001–2011 के दशक में भारत की जनसंख्या वृद्धिदर 17.64 प्रतिशत है।
10. जनसंख्या में वृद्धि या कमी मुख्यतः जन्म व मृत्यु दर के अन्तर के कारण होती है।
11. प्रति इकाई क्षेत्रफल (प्रति वर्ग कि.मी.) के रहने वाले व्यक्तियों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं।
12. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता 73 प्रतिशत है।

13. केरल भारत का सर्वाधिक साक्षर राज्य है जिसकी साक्षरता दर 2011 की जनगणना के अनुसार 94 प्रतिशत थी।

14. भारत में साक्षरता दर बढ़ रही है। पुरुष साक्षरता दर स्त्रियों की साक्षरता दर से अधिक है।

15. प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या लिंगानुपात कहलाती है। 2011 की जनगणना में भारत में लिंगानुपात 943 तथा राजस्थान में लिंगानुपात 928 है।

16. बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने में परिवार नियोजन कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है। योजनाओं के माध्यम से सरकार दूर दराज के क्षेत्र में चिकित्सा एवं परिवार कल्याण सेवाएं उपलब्ध करवा रही है।

17. भारत की जनसंख्या का दो तिहाई से थोड़ा अधिक भाग गाँवों में निवास करता है।

अभ्यास प्रश्न

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में सर्वाधिक जनसंख्या किस राज्य की है ?
2. राज्यों के क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का देश में कौनसा स्थान है?
3. सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य कौन सा है?
4. राजस्थान में 2011 की जनगणना के अनुसार लिंगानुपात कितना है?
5. भारत का जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में कौनसा स्थान है?
6. भारत में जनगणना कितने वर्षों के अन्तराल में होती है?
7. किसी देश या स्थान की जनसंख्या में वृद्धि या कमी के प्रमुख कारण क्या हैं?
8. राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला कौन सा है?
9. जनसंख्या वृद्धि या परिवर्तन के तीन प्रमुख घटक कौन–कौन से हैं?
10. लिंगानुपात क्या है?
11. 2011 की जनगणना के अनुसार देश की साक्षरता दर कितनी है?
12. परिवारों के आकार को सीमित रखने हेतु सरकार ने कौन सा कार्यक्रम प्रारम्भ किया?
13. राजस्थान का सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला जिला कौनसा है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. साक्षरता दर किसे कहते हैं?
2. संसाधन किसे कहते हैं?
3. जनसंख्या वृद्धि दर क्या है तथा भारत की जनसंख्या वृद्धि दर किस दशक से कम होने लगी और क्यों?
4. किसी देश की जनगणना उस देश की जनसंख्या से सम्बन्धित कौन–कौन सी प्रमुख जानकारियाँ प्रदान करती है।
5. जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करने के उपाय लिखिए।
6. ग्रामीण से शहरी क्षेत्र की ओर जनसंख्या के प्रवास के प्रमुख कारण लिखिए।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. जनसंख्या नीति की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करो।
2. तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण तथा उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. नगरीकरण क्या है? इसके लाभ व उत्पन्न होने वाली समस्या का वर्णन करो।
4. जनसंख्या नीति क्या है ? राजस्थान की जनसंख्या नीति का वर्णन करो।